कल्पना के लोक से आलोकित होता *तारिक का सूरज*

प्रतिभा कटियार

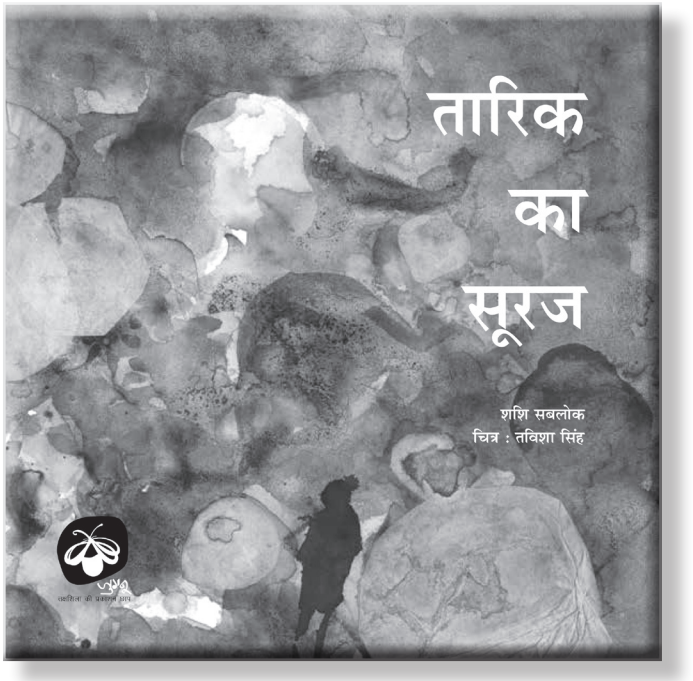

तारिक का सूरज

लेखिका : शशि सबलोक

प्रकाशक : जुगनू प्रकाशन

तारिक का सूरज एक ऐसी कहानी है जो कल्पना के कैनवास पर अपने मन की दुनिया गढ़ती है। ऐसी दुनिया जहाँ हर समय रोशनी है। *तारिक का सूरज* दुनिया को थोड़ा ज़्यादा रोशन करती है।

कहानी कुछ यूँ है कि तारिक को भी बाक़ी बच्चों की तरह खेलना बहुत पसन्द है, और उसका खेलना निर्भर है दिन पर। सूरज डूबा, रात हुई, और खेल बन्द। शाम होते ही अम्मी की पुकार, कि तारिक शाम हो गई आ जाओ, पढ़ाई करो, खाना खाओ, सो जाओ, के अनकहे निर्देश जो तारिक को ख़ास पसन्द नहीं। तारिक तो रात में भी खेलना चाहता है इसलिए उसे रात में सूरज की कमी खलती है। अब तारिक कर भी क्या सकता है! एक रोज़ यूँ ही वो काग़ज़ पर गोदा-गादी करते हुए सोचने लगा कि काश! रात में भी सूरज उगता तो उसे खेलने को और समय मिलता। यह सोचते-सोचते तारिक काग़ज़ पर सूरज बना देता है, और वो सूरज रात को चमकने लगता है। यही है इस कहानी की नई दुनिया।

तारिक का सूरज पढ़ते हुए हम कल्पना की एक ऐसी दुनिया में जा पहुँचते हैं जहाँ दुनिया के सारे बड़े और समझदार लोगों को पहुँच ही

जाना चाहिए, क्योंकि असल में तो हम सबके भीतर भी एक तारिक है जो कहीं खो गया है।

कल्पना, तर्क और संवेदनशीलता के बीच का समन्वय बनाती यह बाल कहानी बच्चों के लिए कल्पना के नए द्वार खोलती है। संवेदना के ऐसे महीन रेशे हैं इस कहानी में कि सूरज रात को उगे तो किसी को परेशानी भी न हो। तो कैसे सँभाल लिया जाए यह सब! यहाँ काम आती है तारिक की तरक़ीब।

किसी भी मनःस्थिति में पाठक इस कहानी के पन्ने पलटें, कहानी से गुज़रते हुए वे एक ख़ामोशी से भर उठेंगे। ऐसी ख़ामोशी जो दुनियादारी की तमाम पेचीदगियों से दूर ले जाती है।

इस छोटी-सी कहानी में बड़ी-सी दुनिया के तमाम बड़े-बड़े सवालों के जवाब मिलते दिखते हैं। जितनी बार इस कहानी को पढ़ते हैं, एक सँवरी हुई दुनिया का ख़्वाब मुस्कुराता नज़र आता है।

नन्हा तारिक रात में भी खेलने की ललक में अपने काग़ज़ पर बनाए सूरज को सेम की बेल पर टाँग देता है। बेल चढ़ जाती है आम के पेड़ पर, और उसका सूरज दिप-दिप करने लगता है। तारिक की दुनिया में अब रात में भी सूरज उगने लगता है।

तर्क कहता है कि भला रात को भी कहीं सूरज उगता है। लेकिन कल्पना के आकाश पर क्या नहीं हो सकता! पिछले दिनों आई फ़िल्म *स्काई इज़ पिंक* का एक संवाद याद आता है जिसमें माँ अपने बच्चे से कहती है, "अगर तुम्हारा स्काई पिंक है तो स्काई का कलर पिंक ही है। तुम्हें किसी के भी कहने से अपने स्काई का रंग बदलने की ज़रूरत नहीं है।"

शिक्षक जब बच्चों को कल्पनात्मक और सृजनात्मक होने के अवसर देते हैं, तब भी उसमें काफ़ी दीवारें खड़ी होती हैं। ये दीवारें सामाजिक संरचना के तमाम कारणों ने मिलकर

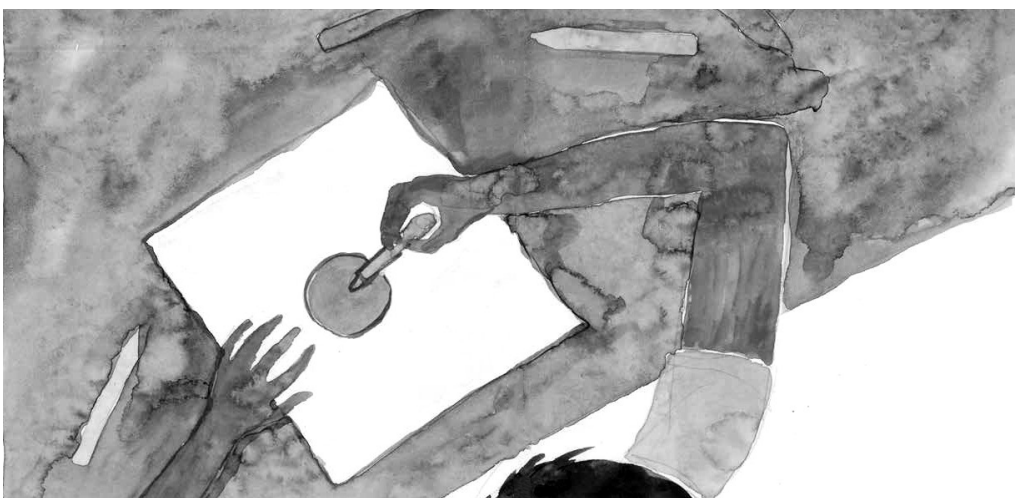

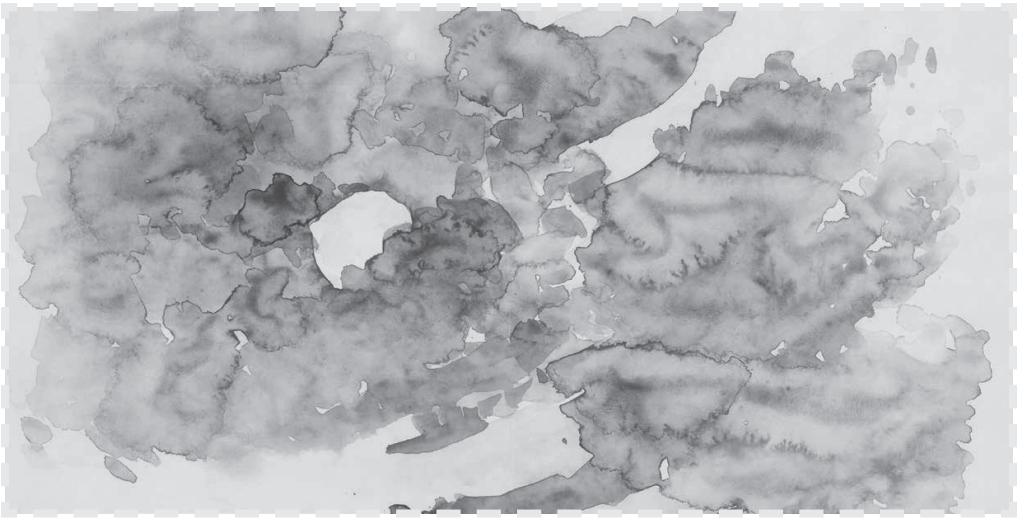

बनाई हैं जो खुलेपन को भी खुलने नहीं दे पातीं। ऐसे में, यह कहानी बताती है कि कहानियों में, कक्षा में मौजूद बच्चों के जीवन के अनुभवों को किस तरह पिरोना है, किस तरह उनका हाथ थामकर आगे बढ़ना है।

बात सिर्फ़ तारिक के सूरज के रात में भी उगने तक सीमित नहीं रहती है बल्कि उल्लू की परेशानी तक जा पहुँचती है। उल्लू जब रात में खाने की तलाश में निकलता है, वह रात में उगे सूरज के कारण परेशान होकर तारिक की खिड़की पर जा बैठता है।

मासूम तारिक ख़ुद के खेलने के लिए रात में सूरज तो चाहता है, लेकिन वो यह नहीं चाहता कि उल्लू भूखा रहे। वह उसे खाने के लिए दूध-रोटी देता है। अब यहाँ ठहरकर सोचने की बात यह है कि क्या यह सिर्फ़ उल्लू की या उसकी भूख की बात है। तारिक का उसे दूध-रोटी देना कितनी बड़ी रेंज खोलता है मासूमियत का हाथ थामे इस दुनिया को सँवार देने की।

उल्लू का यह कहना, "लेकिन मैं तो कीड़े खाता हूँ", तारिक को सोचने पर मजबूर कर देता है। ख़ुद के लिए कुछ चाहना क्या सिर्फ़ ख़ुद के लिए कुछ चाहना मात्र होना चाहिए। सवाल और जवाब दोनों इस नन्ही कहानी के बड़े-से फ़लक में समाए हैं।

रात को भी तो परेशानी है न सूरज के रात में उगने से। वो हवा से शिकायत करती है। हवा समझती है उसकी बात।

ये जो एक दूसरे को समझना, अलग होना स्वभाव में फिर भी सहगामी होना, अलग-अलग होकर भी साथ मिलकर सुन्दर दुनिया को

बनाने में, बचाने में अपनी भूमिकाओं को निभाना कितना ज़रूरी है, इसकी कहन है यह कहानी।

यह कहानी शिक्षकों को ढेर सारे अवसर उपलब्ध कराती है। वे इस कहानी के बहाने बच्चों के मन की दुनिया में क्या-क्या चलता है, कैसे वो सोचते हैं, क्या हो अगर जब वे जो सोचते हैं वो हो जाए तो, जैसे बिन्दुओं पर चर्चा कर सकते हैं। वे उन्हें सोचने, तर्क करने, कल्पना के आसमान में ऊँची उड़ान लेने को मुक्त कर सकते हैं।

"इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है..." जैसे नीरस हो चुके वाक्य से दूर अगर इस कहानी के बारे में एक लाइन में कहें तो यह कहानी बच्चों को मज़ेदार और अपनी-सी लगने वाली कहानी है।

"दिन के सूरज में *तारिक के सूरज* की भी रोशनी है", यह पंक्ति हम सबके हिस्से की पंक्ति है। हम सबका होना कहाँ-कहाँ शामिल है। हमारे होने ने क्या इस दुनिया को ज़रा भी बेहतर बनाने में कोई भूमिका निभाई है? अगर नहीं, तो सोचने की ओर इशारा करता है तारिक का सूरज।

लेखिका शशि सबलोक ने क्या ही तरल और सरल गद्य का प्रयोग इस कहानी में किया है। कम शब्दों के उपयोग के साथ कैसे एक बड़ी दुनिया में गोता लगाया जाता है, यह इस कहानी में देखने को मिलता है।

तविशा सिंह ने सुन्दर चित्र बनाए हैं। उन्होंने कहानी के मर्म को जस का तस पकड़ा है। उन्होंने कहानी के चित्र वैसे ही बनाए हैं मानो तारिक ने बनाए हों। नन्हे मासूम हाथों की

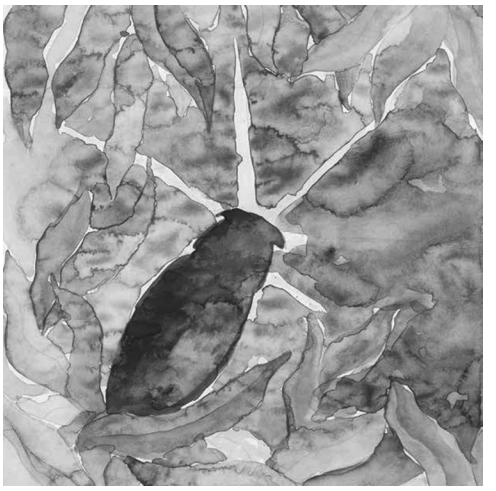

लक़ीरों की छुअन महसूस होती है इन चित्रों में। अनगढ़पन का भी एक रंग होता है, उसकी भी एक ख़ुशबू होती है। लेकिन उसका उपयोग कम ही लोग कर पाते हैं। तविशा इन चित्रों को बनाते हुए सीधे तारिक के मन की दुनिया में प्रवेश करती हैं, और धीरे से उनकी उँगलियाँ तारिक की उँगलियाँ होने लगती हैं। कहानी के चित्र कहानी का विस्तार हैं। रंगों और लक़ीरों का लिखी गई कहानी से अच्छा सामंजस्य है।

तक्षशिला के अन्तर्गत जुगनू प्रकाशन ने इसे प्रकाशित किया है।

शिक्षकों को इस कहानी के ज़रिए कक्षा में काम करने के तमाम अवसर नज़र आएँगे। इस कहानी को बार-बार पढ़ने की ज़रूरत है। हर बार कुछ नई समझ, नए एहसास की परतें खुलती हैं। पढ़ते हुए हमें महसूस होगा कि आसमान में जो सूरज है उसमें तारिक के सूरज की रोशनी तो शामिल है ही, थोड़ी-सी हमारे मन के रोशन कोनों की ख़ुशबू और चमक भी है।

सभी चित्र तारिक का सूरज पुस्तक से साभार

प्रतिभा कटियार ने राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर किया है। शुरुआत पत्रकारिता से करते हुए *स्वतंत्र भारत, पायनियर, हिन्दुस्तान, जनसत्ता, एक्सप्रेस* जैसे हिन्दी के अख़बारों में काम किया है। इसके बाद अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ जुड़कर उन्होंने शिक्षण को अपना करियर बनाया। *वह चिड़िया क्या गाती होगी* पत्र संकलन और *ख़्वाब जो बरस रहा है* व *चयनित कविताएँ* कविता संग्रह और *मारीना की जीवनी* किताब प्रकाशित हो चुकी है। अंडमान यात्रा पर लिखा यात्रा संस्मरण और कविता*ओ अच्छी लड़कियों* कर्नाटक के रानी चेनम्मा विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल हैं। उनकी दो कहानियों पर लघु फ़िल्मों का निर्माण हुआ है। उनकी कविताओं का गुजराती, मराठी और अँग्रेज़ी में अनुवाद हुआ है।

सम्पर्क : pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org